मानव जीवन में लोक–संगीत का महत्व

सारांश

इस प्रकार हम देखते हैं कि मानव जीवन का कोई भी पक्ष लोकसंगीत से अछूता नहीं है। लोक संगीत के बिना सरस और माधुर्य जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

राजेन्द्र माहेश्वरी
प्राध्यापक,
संगीत विभाग,
जानकी देवी बजाज राजकीय कन्या महाविद्यालय,
कोटा, राजस्थान, भारत

मुख्य शब्द : लोकगीत, धुन, जीवन,रंग, राजस्थानी।

प्रस्तावना

यदि हमारे जीवन से लोक–संगीत को निकाल दिया जायेंतो हमारा जीवन शून्य हो जायेगा। मानव के लिए भावों का अत्यन्त महत्व है। भाव नहीं होने पर उसमें प्रेम, सहानुभूति, दया, सौहार्दता नहीं आ सकती। दया, ममता, संवेदना, सहयोग आदि दैवीय गुण लोक गीतों की ही देन हैं। इसके अभाव में मानव क्रूर और कठोर हो सकता है। यदि भावों का संचरण नहीं होता है तो मनुष्य के मस्तिष्क में गई ग्रन्थियां बन जाती है। लोक–गीत यदि लुप्त हो जाये तो समाज में पागलों की संख्या बढ़ सकती है। पं. रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में –कविता शेष सृष्टि के साथ रागात्मक सम्बन्ध स्थापित करती है'' लोक गीतों की सबसे बड़ी देन रागात्मक अंश है। यदि मानव जीवन में रागात्मकता का अंश नहीं है तो वह जीवन बेकार व निरर्थक है। हमें किसी भी चीज में आनन्द नहीं आयेगा और यह जगत् हमारे लिए सूना–सूना रह जायेगा। लोक–गीत उस रागात्मक अंश को जागृत करते है और हमें संसार प्रिय एंव आनन्दायक लगता हैं

जीवन के उदास क्षणों पर लोक–गीत दुःख को कम कर देते है। उसके आनन्द का अंश आ जाता है। इससे सुख दुगना एंव दुःख हलका हो जाता है।

राजस्थान के गांवों में हल जोतते, बीज बोते, निनाण करते, पिलाई करते, फसल काटते हुए किसान, पनघट से पानी जाती हुई महिलाऐं, शादी–ब्याहों के विभिन्न रीति–रिवाजें में गाते हुए स्त्री–पुरूष लोक गीतों के माध्यम से न केवल अपने हृदय के आनन्द को स्वर देते है अपितु समस्त वातावरण को भी रसमय कर देते हैं। विवाह एंव पुत्र जन्मोत्सव पर गाये जाने वाले गीतों से हमारी प्रसन्नता बढ़ जाती है। भात के लोक–गीत किसी भी भाई और बहन को भाव–विह्ल कर देंगे। पारिवारिक दृष्टि से जितना इनका महत्व है उतना किसी भी काव्य का नहीं।

लोक–गीतों में जातियों के साथ अपनत्व व्यक्त हुआ है। कुम्हार का चाक पूजने स्त्रियां जाती है और गीत गाती हैं। मालिन की मनुहार की जाती है। रैगर, दर्जी, सुनार सभी के साथ लोक–गीतों में अपनत्व प्रकट किया गया है। लोक समाज के सदस्य एक दूसरे पर आश्रित है। बिना सहयोग के समाज का काम नहीं चल सकता। लोक–गीत किसी भी देश की संस्कृति के रक्षक है।

त्यौहारों–उत्सवों के साथ इनका अटूट सम्बन्ध है। लोक–नृत्यों एंव लोक नाट्यों को भी ये ही प्राण देते है। ये रीति–रिवाजें एंव देश की मौलिकता को बनाये रखते है। विदेशी सभ्यता एंव संस्कृति के प्रभाव को इन्होंने किसी सीमा तक रोके रखा है। पाबूजी राठौड़, तेजा जाट, गोगा चौहान, राम, कृष्ण, अर्जुन, भीम आदि यशस्वी वीरों एंव कर्त्तव्यपरायण महापुरूषों के आदर्श चरित्र लोकगीत हमारे सामने सदा प्रस्तुत करते रहे हैं।

लोक–गीत हमें सुख व शांति देते है, जो जीवन के अनमोल साथी है। कुछ लोक–गीतों पर अश्लीलता का दोषारोपण करते हैं। एक मायने में वर्तमान समय के कई स्तरहीन लोक–गीत इस श्रेणी में आ सकते है परन्तु छेड़छाड़, मजाक, व्यंग का अंश जो लोक–गीतों में मिलता हैतो श्रेष्ठसाहित्यिक गुण है। संगीत की दृष्टि से देखें तो आदिकाल की राग–रागनियां इनमें सुरक्षित मिलेंगी। हमारे पुराने शकुन, कामण, विश्वास, लोकाचार आदि को लोक–गीत व्यक्त करते हैं। इस प्रकार परम्परा, इतिहास, व संस्कृति की यह बड़ी पूंजी है। यात्रा करते समय लोक–गीत गये जाते है तो रास्ते की थकान महसूस नहीं होती। इसी तरह खेती करते समय गड़ा परिश्रम करते वक्त भी किसान लोक–गीतों का ही सहारा लेते है।

मानव जीवन का कोई–सा भी हिस्सा लोक–गीतों से शून्य नहीं है। बालक जब जन्म लेता है तो पुत्र जन्म की बधाईयां लोक–गीतों में गाई जाती है। उपनयन संस्कार, यज्ञोपवीत संस्कार, विवाह के संस्कार से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक लोक–गीत (हरजस) गाये जाते हे। लोक–गीत हममें स्फूर्ति भरते हैं वे आनंद देते है जो जीवन का अनमोल पाथेय व सहारा हैं आर्थिक दृष्टि से देखें तो कई जातियां लोक–गीत गाकर ही जीवन यापन करती है। इस तरह उनके लिए लोक–गीत अलग महत्व रखते है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत लेख का उद्देश्य जनमानस में लोक संगीत की क्या भूमिका है, स्पष्ट करना है। हमारे जन्म से लेकर विवाह और मृत्यु तक लोक संगीत जुड़ा हुआ है। लोकगीत संगीत के बिना मानव जीवन नीरस एवं शुष्क प्रायः हो जाता है। लोक संगीत उसमें विभिन्न रंग भरता है। अतः लोकगीत संगीत से हमारे जीवन के विभिन्न पक्षों से परिचित करवाना इस लेख का उद्देश्य है।

निष्कर्ष

लोक–गीतों के बीना जीवन की तस्वीर उस श्वेत–श्याम तस्वीर की तरह होगी जिसमें कोई रंग नहीं होता। लोक–गीत हमारे जीवन में रंग भरते है। उसे खुशनुमा बनाते हैं। प्रत्येक मनृष्य को जीवन का एक अर्थ प्रदान करते है चाहे वो छोटा हो या बड़ा। लोक–गीत सबसे लिए एक अमूल्य निधि है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *देवीलाल सांभर – राजस्थान का लोक संगीत(1957)*
2. *सुमित्रा आनंद सिंह – लोक संगीत अंक (1966)*
3. *गीडाराम वर्मा – लोक संगीत अंक (1966)*
4. *आर.पी. नाग – राजस्थानी गीतारो गजरो (1987)*